वैदिक व्याख्यान माला — ३६ वाँ व्याख्यान

[अश्विनौ देवताके मन्त्रोंका निरीक्षण]

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रीके कार्य और व्यवहार

[२]

[यह व्याख्यान नागपूर विश्वविद्यालयमें ता. ३०-१२-५७ के दिन हुआ था]

लेखक
पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्य-वाचस्पति, वेदाचार्य, गीतालङ्कार
अध्यक्ष- स्वाध्याय मण्डल

स्वाध्यायमण्डल, पारडी

मूल्य छः आने

ॐ

[अश्विनौ देवताके मन्त्रोंका निरीक्षण]

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रीके कार्य और व्यवहार

[दूसरा व्याख्यान]

१ अत्रि ऋषिकी सुश्रूषा

असुरोंका राज्य था। उस असुर राज्यको तोडनेके लिये और वहां आर्योंका राज्य स्थापन करनेके लिये अत्रिऋषिके नेतृत्वमें बडी हलचल चल रही थी। अत्रिऋषि नेता थे और उनके नेतृत्वमें रहकर अनेक ऋषि यह असुरोंके विरुद्ध हलचल चला रहे थे। इस वृत्तांतको बतानेवाला यह मंत्र है—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजःऋषिः।

हिमेन अग्निं घ्रंसं अवारयेथां
पितुमतीं ऊर्जं अस्मा अधत्तम्।
ऋबीसे अत्रिं अश्विना अवनीतं
उन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति ॥ ऋ० १।११६।८

१ अश्विनौ सर्वगणं अत्रिं, ऋबीसे अवनीतं, स्वस्ति उन्निन्यथुः— अश्विदेवोंने सब अनुयायियोंके साथ अत्रिऋषिको, जो कि कारावासमें नीचे रखा था उसको ऊपर लाया।

यहां कहा है कि अत्रिके साथ (सर्वगणं) अनेक अनुयायी थे। ये सब अत्रिके साथ हलचलमें शामिल थे। ये सब कारावासमें रखे गये थे। यह कारागृह (अवनीतं) भूसमतल भागसे नीचा था। तय घर जैसा था। ऐसे कठोर कष्ट ये ऋषिगण इस कारावासमें भोग रहे थे। इन ऋषियोंको अश्विदेवोंने (स्वस्ति उन्निन्यथः) सुखदायी रीतिसे ऊपर लाया। जेलखानेसे इन ऋषियोंको बाहर लाया। अर्थात् अश्विदेव प्रजापक्षका साथ कर रहे थे।

२ पितुमतीं ऊर्जं अस्मै अधत्तम्— पुष्टिकारक और बल बढानेवाला अन्न उन ऋषियोंको अश्विदेवोंने दिया। ये ऋषि कारावाससे अत्यंत कृश तथा शरीरसे निर्बल हुए थे। अतः इनको पुष्टिकारक, बल बढानेवाला, शीघ्र पचनेवाला अन्न दिया गया और इनको शीघ्र हृष्टपुष्ट बना दिया।

ऐसे योग्य अन्न अश्विदेवोंने तैयार किये थे। जो इन्होंने इन ऋषियोंको दिये। इससे ये ऋषिगण शीघ्र कार्य करनेमें समर्थ हुए। उत्तम वैद्य ही ऐसे अन्न तैयार कर सकते हैं जिनमें औषधियोंका मिश्रण किया होगा। और चातुर्यसे कुछ विशेष भी किया ही होगा। (पितुमतीं ऊर्जं) ये शब्द विशेष प्रकारके अन्नके सूचक हैं। साधारण भोजनसे यह अन्न विशेष गुणोंसे युक्त था इसमें संदेह नहीं है।

३ घ्रंसं अग्निं हिमेन अवारयेथां— धधकते हुए अग्निको हिमसे-बर्फसे-अथवा जलसे हटा दिया। अर्थात् तप्त घरमें इन ऋषियोंको असुरोंने रखा था। और अग्निकी उष्णतासे और धूंवेसे ऋषियोंको कष्ट पहुंचे इस दुष्ट उद्देश्यसे असुरोंने आजुबाजू अग्नि भी जलाया था, जिससे कारावासमें पडे ऋषियोंको बडे कष्ट होते थे। अश्विदेवोंने पानीसे उस अग्निको शान्त किया।

यहां हम देखते हैं कि असुर सम्राट् ऋषियोंका विरोधी था, ऋषियोंकी हलचल तोडनेका यत्न वह करता था और जनताके नेता ऋषियोंकी सहायता करते थे। ऋषियोंको कारावाससे कारागृह तोडकर छुडाते थे, और उनको उत्तम सहज पचनेवाला पुष्टिकारक और बल बढानेवाला अन्न देकर हृष्टपुष्ट करते थे।

सांख्यः अत्रि ऋषि ।

त्यं चिदत्रिं ऋतजुरं अर्थं अश्वं न यातवे ।
कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नवम् ॥१॥
त्यं चिदश्वं न वाजिनं अरेणवो यमत्नत ।
दृळहं ग्रंथिं न विष्यतं अत्रिं यविष्ठमा रजः ॥२॥
नरा दंसिष्ठौ अत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ॥३॥

ऋ० १०।१४३

१ त्यं ऋतजुरं अत्रिं, यातवे, अश्वं न, अर्थं कृणुथः— उस जर्जर बने अत्रिऋषिको, घोडेके समान चलने-फिरने योग्य, समर्थ बनाया । कारावासमें पडनेके कारण अत्रिऋषि अतिकृश बना था, उसको फिर चलने-फिरने योग्य, घोडेके समान हृष्टपुष्ट बना दिया ।

२ नवं रथं न पुनः कक्षीवन्तं इव कृणुथः— रथ जैसा दुरुस्त करके नया बनाते हैं, वैसा तुमने कक्षीवान्के समान, अत्रि ऋषिको पुनः नयासा हृष्टपुष्ट बनाया ।

३ अत्रिं यविष्ठं दृळहं ग्रंथिं न आ विष्यतं— अत्रिको बलवान् बनाया, सख्त गांठको खोलनेके समान, उस ऋषिको मुक्त किया, बंधनसे छुडाया ।

४ अत्रये धियः सिषासतं-- अत्रिके लिये बुद्धि भी प्रदान की । अर्थात् कारावासके कारण जो क्षीणता आगयी थी, वह तुमने दूर की, जिससे वह ऋषि पुनः पूर्ववत् बुद्धिके कार्य करनेमें समर्थ हुए । इससे यह सिद्ध हो रहा है, कि अत्रिका केवल शरीर ही नहीं ठीक किया, परंतु उसके मनबुद्धिको भी सामर्थ्यवान् बनाया ।

(अश्वं न यातवे) घोडेके समान चलने फिरनेके लिये अत्रिको समर्थ बनाया । इससे स्पष्ट हो रहा है, कि उनके दिये अन्नमें ऐसी शक्ति बढानेका सामर्थ्य था ।

कुत्स आंगिरस ऋषि कहते हैं—

तप्तं घर्मं ओम्यावन्तं अत्रये ॥ ७॥
याभिः अत्रये० ईषथुः ॥ १६ ॥ ऋ. १।११२

'अत्रिके लिये तपे स्थानको सुखदायी और शान्त बनाया । जिन साधनोंसे अत्रिको पुनः ठीक किया ।'

इस कथनमें वही बातें हैं कि जो पूर्वोक्त मंत्रमें वर्णन की हैं । अब कक्षीवान् ऋषिका मंत्र देखिये—

कक्षीवान् ऋषिका यह मंत्र और स्पष्ट कर रहा है—

ऋषिं नरौ अंहसः पांचजन्यं
ऋवीसादत्रिं मुञ्चथो गणेन ।
मिनन्ता दस्योः अशिवस्य मायां
अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥ ऋ. १।११७।३

हे (वृषणौ नरौ) बलवान् नेताओ !

१ पांचजन्यं अत्रिं ऋषिं ऋवीसात् गणेन मुञ्चथः—पञ्चजनोंका हित हो इसलिये अत्रिऋषि हलचल कर रहे थे । उसको अनुयायियोंके साथ कारावाससे तुमने छुडाया । अत्रिऋषिकी हलचल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद इन पांचों प्रकारके लोगोंका हित करनेके लिये थी । और असुर राजा पांचों लोगोंका अहित हो ऐसा राज्यशासन करता था ।

२ अशिवस्य दस्योःमाया मिनन्तौ, अनुपूर्वं चोदयन्तौ— अशुभ दस्यु राज्यशासकके कपट जाल जानकर, उनको-उन मायाजालोंको- एकके पीछे दूसरे, इस तरह तुम दूर करते रहे ।

यहां अत्रिऋषिकी हलचल पंचजनोंका हित कर रही थी । तथा असुर दस्यु प्रजाका अहित हो ऐसा राज्यशासन कर रहे थे, यह स्पष्ट हुआ । असुर राजाके कपट प्रयोगोंको निष्फल बनाना, उनको यथा योग्य रीतिसे जानना और उनमें प्रजाजन न फंसे ऐसा करना अश्विदेवोंका तथा अत्रिऋषिका प्रयत्न था । कारावासके कारण कृश बने ऋषियोंको पुनः शीघ्र शक्तिवान् बनाना यह अश्विदेवोंका कार्य था ।

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः ।

युवमत्रयेऽवनीताय तप्तं
ऊर्जे ओमानं अश्विनौ अधत्तम् ॥ ऋ. १।११८।७
हिमेन घर्मं परितप्तं अत्रये ॥ ऋ. १।११९।६

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।

युवं ह घर्मं मधुमन्तं अत्रये ।
अपो न क्षोदोऽवृणीतं एषे ॥ ऋ. १।१८०।४

तुम दोनों अश्विदेवोंने अत्रि ऋषिके लिये तपे गरम स्थानको ठंडा कर दिया और उस ऋषिको सुख हो ऐसा किया । तथा—

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।

चित्रं ह यद् वां भोजनं न्वस्ति
न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।
यो वां ओमानं दधते प्रियःसन् । ऋ. ७।६८।५

तुमने अत्रिके लिये जो भोजन तैयार करके दिया था, वह (चित्रं नु अस्ति) सचमुच विलक्षण और आश्चर्य-कारक था । तथा वह (अत्रये महिष्मन्तं नि युयोतन) अत्रिके लिये उसकी शक्ति बढानेके हेतुसे तुमने दिया था । तुम्हारी सहायतासे वह अत्रि (वां ओमानं दधते) आपका सुरक्षित आश्रय प्राप्त करता है क्योंकि वह (यःवां प्रियः सन्) आपको प्रिय है ।

अश्विदेवोंने अत्रिको ऐसा भोजन दिया कि जिसके सेवन करनेसे निर्बल हुए अत्रि ऋषि पुनः अपना कार्य करनेमें समर्थ हुए । वैद्योंके लिये यह योग्य है कि वे ऐसा भोजन, अथवा पाक अथवा खानेके पदार्थ तैयार करके निर्बलोंको दें कि जिनके खानेसे वे निर्बल पुनः हृष्टपुष्ट तथा बलवान् बन सकें । पुनः देखिये—

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।

निः अंहसः तमसः स्पर्तं अत्रिं ॥ ऋ. ७।७१।५

ब्रह्मातिथिः काण्वः ।

आवतं० अत्रिं ॥ ऋ. ८।५।२५

गोपवन आत्रेयः ।

उपसृणीतं अत्रये गृहं कृणुत युवं अश्विना ।
वदते वल्गवं अत्रये ॥ ऋ. ८।७३।७-८

काक्षीवती घोषा ।

युवं ऋबीसं उत तप्तं अत्रये ओमवन्तं चक्रथुः ।
ऋ. १०।३९।९

सप्तवध्रिरात्रेयः ।

अत्रिर्ह यद् वां अवरोहद् ऋबीसं
अजोहवीत् नाधमानेव योषा ।
श्येनस्य चित् जवसा नूतनेन
आगच्छतं अश्विना शंतमेन ॥ ऋ. ५।७८।४

अश्विदेवोंने अत्रिका तपा हुआ स्थान सुखावह शान्त किया । जिस समय कारावासमें अत्रिको रखा, उस समय उसने अश्विदेवोंकी प्रार्थना की । अनाथ स्त्री जैसी प्रार्थना करती है वैसी प्रार्थना उसने की । आपने वह सुनी और तरुण श्येन पक्षीके वेगसे आप वहां पहुंचे और उसको आराम पहुंचाया ।

इस वृत्तान्तमें स्पष्ट रीतिसे कहा है कि अश्विदेव किस तरह दुर्बलोंको सबल बनाते थे । किस तरह पुष्टिकारक अन्न तैयार करके दुर्बलोंको देते थे और उनको कार्यक्षम किस रीतिसे बनाते थे ।

यह रुग्ण शुश्रूषाका कार्य है ।

२ रुग्णशुश्रूषाके वैमानिक पथक

अश्विदेव विश्व साम्राज्यके आरोग्यमन्त्री होनेके कारण रुग्णोंकी शुश्रूषा और चिकित्सा करनेका कार्य उनके आधीन था । विदेशी कपटी राज्यके विरुद्ध हलचल करनेवाले पंचजनोंके हितकर्ता अत्रिऋषिकी शुश्रूषा उन्होंने कैसी की थी, इसका वृत्तान्त हमने देखा । अनुयायियोंके साथ अत्रि ऋषिको पुनः पूर्ववत् स्फूर्तिला बनाया यह हमने देखा । अब सैनिकोंके लिये रुग्णपथक थे और उनकी शुश्रूषा करनेवाले वैमानिक पथक थे, और उनकी सुव्यवस्था कैसी थी, यह देखना है । यदि वैमानिक पथक थे ऐसा सिद्ध हो जाय, तो साधारण शुश्रूषा पथक थे, यह स्वयंसिद्ध हो जाता है । इस लिये हम प्रथम वैमानिक पथकोंका ही विचार करेंगे—

कुत्स आंगिरस ऋषिः ।

भुज्युं याभिः अव्यथिभिः जिजिन्वथः ॥ ६ ॥
भुज्युं याभिः अवथः ॥ २० ॥ ऋ. १।११२।६;२०

' हे अश्विदेवों ! जिन सुखदायी साधनोंसे तुमने भुज्युका संरक्षण किया था । ' इन मन्त्रोंमें ' अव्यथिभिः ' अर्थात् व्यथा न देनेवाले वे साधन थे, ऐसा कहा है । साधन रोगियोंकी शुश्रूषा करनेके थे और वे ऐसे थे कि जिनसे रोगियोंको बिलकुल कष्ट नहीं होता था । ऐसे उत्तम साधन अश्विदेवोंने तैयार किये थे । इस विषयमें और मन्त्र देखिये—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिज ऋषिः ।

तुग्रो ह भुज्युं अश्विना उदमेघे
रयिं न कश्चित् ममृवाँ अवाहाः ।
तं ऊहथुः नौभिः आत्मन्वतीभिः
अन्तरिक्षप्रुद्भिः अपादकाभिः ॥ ३ ॥

तिस्रः क्षपः त्रिः अहा अतिव्रजद्भिः
नासत्या भुज्युं ऊहथुः पतङ्गैः ।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे
त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः ॥ ४ ॥
अनारम्भणे तदवीरयेथां
अनास्थाने अग्रभणे समुद्रे ।
यद् अश्विना ऊहथुः भुज्युं अस्तं
शतारित्रां नावं आतस्थिवांसम् ॥ ५ ॥

ऋ. १।११६।३-५

युवं तुग्राय पूर्वेभिः एवैः
पुनर्मन्यौ अभवतं युवाना ।
युवं भुज्युं अर्णसो निः समुद्रात्
त्रिभिः ऊहतुः ऋञ्जेभिः अश्वैः ॥ १४ ॥
अजोहवीद् अश्विना तौग्र्यो वां
प्रोळ्हः समुद्रं अव्यथिभिः जगन्वान् ।
निः तं ऊहथुः सयुजा रथेन
मनो जवसा वृषणा स्वस्ति ॥ १५ ॥

ऋ. १।११७।१४-१५

१ कश्चित् ममृवान् रयिं न— जैसा कोई मरनेवाला अपने धनको यहां छोडता है, और मरता है उस तरह,

२ तुग्रः भुज्युं उदमेघे अवाहाः— तुग्र राजाने अपने पुत्र भुज्युको समुद्रमें छोड दिया। तुग्र नामक राजाने दूसरे राज्यपर आक्रमण करनेके लिये सेनाके साथ अपने पुत्र भुज्युको समुद्रमेंसे भेजा।

३ समुद्रस्य आर्द्रस्य पारे धन्वन्— वह भुज्यु पानीसे भरपूर भरे समुद्रके परे जो रेतका मैदान है उसके समीप पहुंचा था। इतनी दूरीपर वह सैन्यके साथ गया था। वहां उसने युद्ध किया, परन्तु उसका पराभव हुआ और वह भुज्यु सेनाके साथ डूबने लगा।

४ अनारम्भणे अग्रभणे समुद्रे तत् अवीरयेथां— जिसका आरम्भ और अन्त नहीं है, जिसमें आधार किसीका नहीं मिल सकता, ऐसे अगाध समुद्रमें भुज्यु अपनी सेनासे गया था, वहां पराभूत होकर वह कष्ट भोग रहा था। ऐसी अवस्थामें—

५ अश्विना ! तौग्र्यः वां अजोहवीत्— हे अश्विदेवो ! तुग्र राजाके पुत्रने उस पराभूत अवस्थामें आपको बुलाया। आपने उनका शब्द सुना और आप वहां गये।

६ तं ऊहथुः आत्मन्वतीभिः नौभिः अन्तरिक्षप्रुद्भिः अपोदकाभिः— उस भुज्युको तुमने अपने अन्तरिक्षमेंसे जानेवाली मेघमण्डलके जलस्थानमें संचार करनेवाली, इच्छानुसार चलनेवाली आकाशनौकाओंसे ऊपर उठाया।

ये विमान थे इसमें सन्देह नहीं है। क्योंकि (अन्तरिक्षप्रुद्भिः) अन्तरिक्षसे वे जाते हैं, अन्तरिक्षमें मेघमण्डलमें जो जल है (अप-उदकाभिः) उस उदकको ये जहाज स्पर्श कर रहे थे और ये जहाज (आत्मन्वतीभिः) आत्मा जिस तरह स्वेच्छापूर्वक हलचल करता है उस तरह ये हवाई जहाज चलनेवालेकी इच्छानुसार चलाये जाते थे। इस प्रकारके ये उत्तम हवाई जहाज थे।

७ त्रिभिः रथैः शतपद्भिः षडश्वैः— ये हवाई जहाज तीन थे, इनको सौ पग थे और छः छः अश्व शक्तिवाले ये पग थे। ये तीन रथ थे यह पूर्वोक्त स्थानमें 'नौभिः अन्तरिक्षप्रुद्भिः' इन पदोंसे भी सिद्ध होता है। क्योंकि ये पद बहुवचनमें हैं।

८ तिस्रः क्षपः त्रिः अहा अतिव्रजद्भिः पतङ्गैः भुज्युं नासत्या ऊहथुः— तीन रात्री और तीन दिन अति वेगसे चलनेवाले पक्षी जैसे आकाश यानोंसे अश्विदेवोंने भुज्युको उठाकर लाया। यहां 'पतङ्गैः' पद पक्षी जैसे आकाश यानोंका स्पष्ट वाचक है। 'वीभिः' यह पद भी पक्षी जैसे आकाश यानोंका ही भाव बता रहा है। तीन आकाश यान थे, इससे भुज्युके साथ जख्मी सैनिक भी थे, यह स्पष्ट होजाता है। नहीं तो अकेले भुज्य नामक राजकुमारको तीन आकाश यानोंकी जरूरत नहीं है। तीन अहोरात्र अतिवेगसे चलनेवाले ये हवाई जहाज थे। इससे पता लगता है कि भुज्यु आफ्रिकाके रेतीले प्रदेशके समीप किसी देशमें गया होगा। नहीं तो हवाई जहाज इतने समय क्यों घूमता रहेगा।

घण्टेमें सौ मील भी आकाश यान गया तो भी ७२ घण्टोंमें ७२०० मील तो जायेगा ही। कमसेकम इतना दूर तो वह स्थान होगा ही जहां भुज्यका पराभव हो गया था।

हवाई जहाज तीन अहोरात्र आज भी एक वेगसे आकाशमें रह नहीं सकता। और यहां तो तीन अहोरात्र एकसा बडे वेगसे उडनेका उल्लेख है। किस यंत्र शक्तिसे यह गति मिलती थी इसका पता वेदसे नहीं मिलता।

कई लोगोंका मत है कि वह 'पारदयंत्र' थे जिससे ये विमान चलते थे। पारेकी भाप करके यंत्रको गति देनी और पुनः उस भापका पारा बनाना। इससे सतत गति मिल सकती है। दूसरोंका कहना है कि घण्टेमें सौ डेढसौ मील उडनेवाले पक्षी उत्तर ध्रुवके पास हैं। उनको विमानोंमें लगाया जाता था। इस तर्कमें कौनसा सत्य है इसकी खोज कोई विद्वान् करे। आज हमारे पास कोई साधन नहीं है कि जिनसे इन विमानोंको गति देनेके साधन कौनसे थे यह हम जान सकें। पर ये विमान थे इसमें संदेह नहीं। क्योंकि वैसे अर्थके पद उक्त मंत्रोंमें हैं और उनका दूसरा कोई अर्थ हो नहीं सकता।

९ मनोजवसा सयुजा रथेन तं स्वस्ति निः ऊहथुः— मनके वेगसे चलनेवाले संयुक्त रथसे उस भुज्युको अश्विदेव ले जाते थे। अति वेगसे वह रथ जाता था, परंतु अन्दर बैठनेवालेको (स्वस्ति) आराम मिलता था। ऐसे वे रथ उत्तम थे।

(अजोहवीत् तौग्र्यो वां) अर्थात् इतनी दूरसे भुज्युने अश्विदेवोंके पास संदेश भेजा और अश्विदेव इतनी दूर विमान लेकर चले गये। इससे पता लगता है कि संदेश शीघ्र भेजनेका कोई "शीघ्रगामी साधन" उस समय अवश्य था। नहीं तो तीन अहोरात्र विमानके प्रवास पर जो राजपुत्र पडा था, उसका पता उसके घर या अश्विदेवोंको किस तरह लग सकता है।

१० युवं तुग्राय पूर्वेभिः एवैः पुनः मन्यौ अभवतम्— इन सहायताओंसे तुम दोनों तुग्र राजाके लिये पुनः माननीय होगये। इससे पता चलता है कि इससे अश्विदेवोंका संमान तुग्रके दरबारमें पूर्वकी अपेक्षा अधिक होने लगा। जब राजपुत्रको उन्होंने सुरक्षित घर पहुंचाया, तब उनका संमान बढना स्वाभाविक ही है। इतनी दूरसे राजकुमार अपने अनुयायियोंसे सुरक्षित वापस घर आया, यह आनंदकी बात है इसमें क्या संदेह है।

११ यद् अश्विना भुज्युं अस्तं ऊहथुः शतारित्रां नावं आतस्थिवांसम्— अश्विदेवोंने भुज्युको घर पहुंचा दिया, चलानेके साधन सौ जिसको लगे हैं वैसी नौकामें बिठलाकर घर भुज्युको पहुंचाया। नौका शब्द नावका वाचक ही नहीं है, हवाई जहाज कहते हैं, हवाई नौका भी कहा जा सकता है। 'विभिः, पतङ्गैः, अन्तरिक्षप्रुद्भिः' आदि पद स्पष्टतासे विमानके ही वाचक हैं। यही भाव 'नौ, रथ' आदि पदोंका मानना योग्य है।

ये विमान रुग्णोंकी शुश्रूषा करनेके थे। अश्विनौ देव वैद्य थे। वैद्यकी आवश्यकता उस समय होती है कि जिस समय मनुष्य रोगी, या जख्मी होता है। भुज्यु समुद्रके पार रेतीले देशमें पहुंचा हुआ था। अरब देशसे परे रेतके मैदान हैं वहां गया था। वहां उसका पराभव हुआ। वहांसे संदेश भेजा गया। यह केवल प्रार्थना ही हो, तो केवल प्रार्थना इतनी दूरीपरसे कैसी पहुंचे? इसलिये 'संदेश वाहक कुछ यंत्र थे' ऐसा मानना ही चाहिये।

बडा समुद्र था, उसमें आधारके लिये कोई स्थान नहीं था। इस कारण घोडोंसे चलनेवाले रथ वहां जा ही नहीं सकते थे। भुज्यु नौकाओंसे गया होगा पर आनेके समय वह हवाई जहाजसे आया है। इस विषयमें और मन्त्र देखिये—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।

१ निः तौग्र्यं पारयथः समुद्रात्। ऋ. १।११८।६

२ युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतम्।
स्वयुक्तिभिः नि वहन्ता पितृभ्य आ॥
ऋ. १।११९।४

३ अगच्छतं कृपमाणं परावति
पितुः स्वस्य त्यजसा निबाधितम्।
स्वर्वतीः इत ऊतीः युवोः अहे
चित्रा अभीके अभवन्नभिष्टयः॥ ऋ. १।११९।८

दीर्घतमा औचथ्यः।

४ युक्तो ह यद् वां तौग्र्याय
पेरुः वि मध्ये अर्णसो धायि पज्रः।
ऋ. १।१५८।३

५ तौग्र्यो न जिविः॥ ऋ. १।१८०।५

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः।

६ युवं एतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवं
आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय।
येन देवत्रा मनसा निः ऊहथुः
सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः॥ ५॥
अवविद्धं तौग्र्यं अप्स्वन्तः
अनारम्भणे तमसि प्रविद्धम्।

चतस्रो नावो जठरस्य जुष्टाः
उदश्विभ्यां इषिता पारयन्ति ॥ ६ ॥
ऋ. १।१८२।५-६

बार्हस्पत्यो भरद्वाज ऋषिः ।

७ ता भुज्युं विभिः अद्भ्यः समुद्रात्
तुग्रस्य सूनुं ऊहथुः रजोभिः ।
अरेणुभिः योजनेभिः भुजन्ता
पतत्रिभिः अर्णसो निः उपस्थात् ॥ऋ. ६।६२।१

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ऋषिः ।

८ उत त्यं भुज्युं अश्विना सखायो
मध्ये जहुः दुरेवासः समुद्रे ।
निः ईं पर्षत् अरावा वो युवाकुः ॥ ७ ॥
ऋ. ७।६८।७

९ युवं भुज्युं अवविद्धं समुद्रे
उदूहथुः अर्णसो अस्रिधानैः ।
पतत्रिभिः अश्रमैः अव्यथिभिः
दंसनाभिः अश्विना पारयन्ता ॥७॥ ऋ.७।६९।७

ब्रह्मा।तिथिः काण्वः ऋषिः ।

१० कदा वां तौग्र्यो विधत् समुद्रे जहितो नरा।
यद्वां रथो विभिष्यतात् ॥ २२ ॥ ऋ, ८।५।२२

काक्षीवती घोषा ऋषिका ।

११ निः तौग्र्यं ऊहतुः अद्भ्यः परि
विश्वेत् ता वां सवनेषु प्रवाच्या ॥
ऋ. १०।३९।४

युवं भुज्युं पारयथ ॥ ऋ. १०।४०।७

अत्रिः सांख्यः ऋषिः ।

१२ युवं भुज्युं समुद्र आ रजस्पार इंखितम् ।
यातमच्छा पतत्रिभिः नासत्या सातये कृतम्
॥ ५ ॥ ऋ. १०।१४३।७

इन मंत्रोंमें तुग्र राजाका पुत्र भुज्यु परदेशमें विजय प्राप्तिके लिये गया था ऐसा वर्णन है । (जिग्री तौग्र्यः । ऋ. १।१८०।५) तुग्र राजाका पुत्र विजय प्राप्त करनेकी इच्छासे इतना दूर गया था । वहां उसका पराभव हुआ । इसलिये शुश्रूषा करनेके विमान भेजने पडे ।

ये विमान तीन थे या चार थे इस विषयमें संदेह है । अगस्त्य ऋषिके मंत्रमें कहा है कि—

चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा ।
उदश्विभ्यां इषिताः पारयन्ति ॥ ऋ. १।१८२।५

'चार नौकाएं अन्तरिक्षमें तुम्हारे- अश्विदेवोंके-द्वारा चलायी हुई भुज्युको पार करती रहीं । ' इसमें 'चतस्रः नावः ' ये पद चार हवाई जहाज थे ऐसा बता रहे हैं । 'जठल' पद 'जठर' के लिये है । यह वास्तवमें उदरका नाम है । जो व्यक्तिमें उदर है वही विश्वमें अन्तरिक्ष है अर्थात् ये चार नौकाएं विश्वके उदरमेंसे अर्थात् अन्तरिक्ष-मेंसे भुज्युको पार कर रही थीं । पर कक्षीवान् ऋषिके मंत्रमें—

त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः ।
अतिव्रजद्भिः ऊहथुः पतङ्गैः ॥ ऋ. १।११६।४

तीन रथोंसे जो पक्षीके सदृश और अतिवेगसे जानेवाले थे, उनमेंसे भुज्युको उनके साथके अनुयायियोंके समेत अश्विदेव उठाकर ले जाते थे ।

' चतस्रो नावः । ' = अगस्त्यः
' त्रिभी रथैः । ' = कक्षीवान्

इन दो ऋषियोंके कथनमें यह अन्तर है । इस विषयकी खोज करनी चाहिये । ' शुश्रूषाके वैमानिक पथक थे ' इतनी बात हमारे लिये पर्याप्त है । फिर वे तीन विमानोंके हों, या चार विमानोंके हों ।

भुज्यु अपने राज्यसे सेना लेकर जो विजयार्थ गया था, वह भी विमानोंसे गया था, ऐसा कक्षीवान्के मंत्रसे पता लगता है, देखिये—

युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं ।
स्वयुक्तिभिः निवहन्ता पितृभ्य आ ॥
ऋ. १।११९।४

(विभिः गतं भुरमाणं भुज्युं) पक्षी सदृश विमानोंसे गये और भ्रान्त हुए भुज्युको (युवं) तुम दोनोंने (स्वयु-क्तिभिः) अपनी युक्तियोंसे (पितृभ्यः आ निवहन्ता) उसके पिता तुग्र राजाके पास उस भुज्युको पहुंचाया ।

इसमें कहा है कि भुज्यु भी विमानोंसे गया था पर इस मंत्रका अन्वय अन्य रीतिसे भी लग सकता है इस-लिये यह बात यहां अनिश्चितसी रहती है ।

युवं एतं आत्मवन्तं पक्षिणं प्लवं
तौग्र्याय चक्रथुः । ऋ. १।१८२।५

' आपने भुज्युके लिये यह पक्षी सदृश स्वशक्तिसे युक्त हवाई जहाज किये थे । ' इस मंत्रमें ' पक्षिणं प्लवं ' ये दो पद महत्त्वके हैं । ये जहाज पक्षी सदृश थे यह बात इससे सिद्ध होती है ।

परदेशमें भुज्युका पराभव हुआ और वह समुद्रमें कष्टमें पडा था—

अनारम्भणे तमसि प्रविद्धं अप्सु अन्तः ।
अवविद्धं तौग्र्यं नावः उत्पारयन्ति ॥

ऋ. १।१८२।६

जिसका आदि अन्त नहीं ऐसे अन्धकारमें तथा अगाध जलमें पडे भुज्युको अश्विदेवोंकी नौकाएं ऊपर उठाकर पार करती हैं ।

अर्थात् यह भुज्यु पराभूत होकर समुद्रमें पडा था । उस समय अन्धकार भी घना था । अर्थात् इस राजपुत्रके पास समुद्रमें चलनेवाली नौकायें टूटी फूटी होंगी । उनमें उनके सैनिक रहे थे और कष्ट भोग रहे थे । और वहांसे उसने संदेश भेजा होगा । और वह संदेश प्राप्त करके अश्विदेवोंने विमान भेजे होंगे ।

इन मंत्रोंको देखनेसे इस बातका स्पष्ट पता लगता है कि भुज्यु समुद्रमें पराभूत अवस्थामें पडा था । वह समुद्र भी अथांग था । आजूबाजूमें किसीका आधार नहीं था । अश्विदेवोंके हवाई जहाज आये और (उत् ऊहथुः) भुज्युके सैनिकोंको उन्होंने ऊपर उठाकर हवाई जहाजमें लिया और उसके घर पहुंचा था । यह हवाई जहाजका प्रवास तीन अहोरात्रका था । और यह प्रवास उन जख्मी सैनिकोंको (स्वस्ति) सुखसे हुआ । ऐसे आराम देनेवाले ये विमान थे ।

हवाई जहाज अन्तरिक्षमें रहे होंगे, छोटी नौकाएं नीचे छोड दी गयी होंगी । उनके साथ शुश्रूषाके स्वयंसेवक गये और उन्होंने उन जख्मी सैनिकोंको ऊपर लिया होगा । अर्थात् ये सब साधन होंगे ऐसा ऊपर लिखे पदोंसे स्पष्ट दीखता है । ' उत् ऊहथुः ' का अर्थ ' ऊपर उठाया ' ऐसा ही है । नीचे रहेको ऊपर उठाया जाता है । ऊपर हवाई जहाज रहेगा, उसमें समुद्रमें पडे जख्मियोंको ऊपर उठानेके साधनोंके विना नहीं लिया जा सकता । अर्थात् ये साधन थे इसमें संदेह नहीं है ।

*

हवाई जहाज आकाशमें ही रहेंगे, पर जहां चाहिये वहां वे जितनी देरतक स्थिर रहें ऐसी योजना उनमें होनी चाहिये । अन्यथा नीचे समुद्रमें पडे जख्मियोंको ऊपर उठाना संभव ही नहीं है ।

पचास वर्षोंके पूर्व युरोपमें बलून थे । उस समय पक्षी सदृश हवाई जहाज नहीं थे । पर वेदमें हजारों वर्षोंके पूर्वके इन मंत्रोंमें ' पतंग, वी, श्येन, पक्षी ' ये पद हवाई जहाजोंके लिये प्रयुक्त हुए हैं । ये पद ' पक्षी जैसे हवाई जहाजोंके ही निःसंदेह वाचक हैं । ' युरोपीयनोंको पक्षी जैसे हवाई जहाजोंका पता भी नहीं था, उस समय वैदिक ऋषि ऐसे हवाई जहाजोंका वर्णन कर रहे हैं यह आश्चर्यकी बात है ।

शुश्रूषापथकके विमान थे, उस समय अन्य आवागमनके लिये विमान होंगे यह स्वयं सिद्ध है । यदि इन मंत्रोंसे विमानोंका अस्तित्व माना जायगा तो उसके साथ प्रकृति विज्ञानकी जितनी विशेष प्रगति होनी आवश्यक है उतनी माननी ही पडेगी, अन्यथा विमान थे और अन्य प्रगति नहीं थी ऐसा मानना कठिन है ।

३ विश्पलाको लोहेकी टांग लगाना

खेल राजाकी पुत्री विश्पला थी । वह युद्ध करनेके लिये युद्धमें गयी थी । युद्ध करते समय उसकी टांग टूट गयी थी । अश्वि देवोंने उसको लोहेकी टांग बिठला कर उसको चलने फिरने योग्य बनाया । यह वृत्त नीचे लिखे मंत्रोंमें है । देखिये—

कुत्स आंगिरस ऋषि ।

याभिः विश्पलां धनसां अथर्व्यं ।
सहस्रमीळ्ह आजावजिन्वतम् ॥ ऋ. १।११२।१०

' (सहस्र-मीळ्हे आजौ) सहस्रों सैनिक जहां लडते हैं ऐसे युद्धमें (याभिः) जिन साधनोंसे (धनसां अथर्व्ये विश्पलां अजिन्वतं) धनका दान करनेवाली अथर्वकुलमें उत्पन्न विश्पलाकी सहायता की । ' इस विश्पलाको किस तरहकी सहायता की गई इसका वर्णन नीचे लिखे मंत्रमें देखिये—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिज ऋषिः ।

चरित्रं हि वे इव अच्छेदि पर्ण
आजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।

सद्यो जंघां आयसीं विश्पलायै
धने हिते सर्त्तवे प्रत्यधत्तम् ॥ ऋ. १।११६।१५

(वेः पर्ण इव) पक्षीका पंख टूटता है उस तरह (आजा) युद्धमें (खेलस्य चरित्रं अच्छेदि हि) खेल राजाकी पुत्री विश्पलाका पांव टूट गया था। तब (परितक्म्यायां) उस कठिन समयमें (धने हिते) युद्ध चालू रहनेकी अवस्थामें (सर्तवे) चलने फिरनेके लिये (सद्यः) तत्काल ही (आयसीं जंघां विश्पलायै प्रत्यधत्तं) लोहेकी टांग विश्पलाके लिये लगा दी।

' खेल ' नाम अब भी सीमा प्रान्तके पठाणोंमें है। ' झाका खेल, ईसा खेल ' आदि नाम आज भी वहां हैं। उस खेल राजाकी पुत्री विश्पला थी। वह युद्ध करनेके लिये गयी थी। युद्ध चल रहा था, इतनेमें उस विश्पलाकी टांग कट गयी। इस कारण उस विश्पलाका चलना-फिरना और युद्ध करना असंभवसा हो गया। अश्विदेवोंने उस विश्पलाका आपरेशन किया, घाव ठीक किया और उसको लोहेकी टांग बिठला दी जिससे वह विश्पला उत्तम रीतिसे चलने-फिरने योग्य बन गयी।

लोहेकी टांग लगानेका कार्य और कटी टांगको काट-कूट करके ठीक करनेका कार्य अश्विदेवोंने किया। यह आपरेशन बडा है, तथा लोहेकी टांग लगा कर युद्धमें जाने और युद्ध करनेमें समर्थ बनाना एक कठिन कार्य है। अश्विदेवोंने यह ठीक तरह किया है। इस विषयमें कहा है—

सं विश्पलां नासत्या अरिणीतम् ॥
ऋ. १।११७।११

' हे अश्विदेवो। तुमने विश्पलाको (सं अरिणीतं) ठीक कर दिया था ' तथा—

प्रति जंघां विश्पलाया अधत्तम् ॥ ऋ.१।११८।८
धियं जिन्वा धिष्ण्या विष्पलावसू सुकृते शुचिव्रता। ऋ. १।११८।१

' आपने विश्पलाको नयी जांघ लगादी। आप बुद्धिसे कार्य करनेवाले, बुद्धिमान्, उत्तम कार्य करनेवाले, पवित्र कार्य करनेवाले और विश्पलाको चलने-फिरने योग्य बनानेवाले हैं।

काक्षीवती घोषा ऋषिका।

युवं सद्यो विश्पलां एतवे कृथः ॥ ऋ.१०।३९।८

तुमने विश्पलाको लोहेकी टांग लगाकर चलने-फिरने योग्य बना दिया।

इस तरह विश्पला नामक शूरवीर राजपुत्रीको कटी हुई टांगके स्थानपर लोहेकी टांग ठीक तरह लगाकर उसको चलने-फिरने, युद्ध करने योग्य बना दिया इसका वर्णन है। इस वृत्तसे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि ऐसे बडे आपरेशन्स इस वैदिक समयमें होते थे, और कृत्रिम बनावटी अवयव लगाकर लोगोंको अपने कार्य करने योग्य बनाया जाता था।

४ वृद्ध च्यवन ऋषिको तारुण्यकी प्राप्ति

अतिवृद्ध च्यवन ऋषिको अश्विदेवोंने औषधियोंके उपचारसे तरुण बनाया और उसका विवाह तरुणी राजपुत्रीके साथ हुआ और वे विवाहित स्त्रीपुरुष सुखसे संसारयात्रा करने लगे। च्यवन ऋषिके लिये जो कायाकल्प किया था, उसका नाम " च्यवन प्राश " नामसे आयुर्वेदके ग्रंथोंमें प्रसिद्ध है। यह आंवलोंका पाक है और उसमें अष्टवर्ग आदि औषधियां पडती हैं। ' च्यवनप्राश ' नाम वेदमें नहीं है, पर च्यवनऋषिको तरुण बनानेका उल्लेख वेदमें है, देखिये—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।
जुजूरुषो नासत्योत वर्त्रिं
प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानम्।
प्रातिरतं जहितस्य आयुः
दस्राऽऽदित् पतिं अकृणुतं कनीनाम् ॥
ऋ. १।११६।१०

१ जुजूरुषः च्यवानात् द्रापिं इव वर्त्रिं प्रमुञ्चतं— अति वृद्धच्यवन ऋषिके शरीरसे, कवच निकालनेके समान, ऊपरकी चमडी तुमने निकाल दी।

शरीरपरसे जैसा कोट उतारते हैं उस तरह शरीर परसे चमडी उतार दी। यही तारुण्य प्राप्त होनेका साधन होगा। शरीरपरसे चमडी उतारी जाय और नयी चमडी वहां आ जाय तो मनुष्य तरुण हो सकता है। साप अपनी कंचुली उतार देता है उस तरह मनुष्यके शरीरसे ऊपरकी पतली त्वचा औषधि प्रयोगसे उतारी जाय, तो मानव शरीर तरुण जैसा पुनः हो सकता है। इस विधिकी सूचना देनेवाले पद इस मंत्रमें ये हैं— ' द्रापिं इव वर्त्रिं प्रमुञ्चतं ' कुर्ता या कवच उतारनेके समान शरीर परसे चमडी उतार दी।

२ उत जहितस्य आयुः प्रातिरतं— और तुमने उस परित्यक्त जैसे ऋषिको अतिदीर्घ आयु प्रदान की। शरीर-परकी चमडी उतारनेसे यह वृद्ध तरुण बना।

३ आत् इत् कनीनां पतिं अकृणुत— और अनेक कन्याओंका पति उस च्यवनको तुमने बनाया। इतना तारुण्य उस च्यवनके देहमें आया था जिससे वह (कनीनां पतिः) अनेक स्त्रियोंका पति होने योग्य जवान हुआ।

च्यवन ऋषिने एक ही कन्याका पाणिग्रहण किया था, अनेकोंका नहीं। यहांके मंत्रमें (कनीनां पतिः) ऐसे पद हैं। इसका अर्थ अनेक, कमसे कम तीन, पत्नियां उसने की ऐसा होता है, पर कथाओंमें वैसा नहीं लिखा है। कथामें एक ही पत्नीका उल्लेख है। इससे यह सिद्ध हुआ कि उसमें अनेक स्त्रियोंके साथ विवाह करनेका सामर्थ्य उत्पन्न हुआ था, पर उसने एक ही कन्याके साथ विवाह किया था।

पुराणोंमें ऐसी कथा है कि एक राजाकी राजपुत्री सुकन्या नामक थी। उसके साथ च्यवन ऋषिका विवाह हुआ और वे दोनों सुखसे रहने लगे थे। अर्थात् अश्विदेवोंने च्यवनको तरुण बनानेके पश्चात् यह सब हुआ था। वृद्धको तरुण स्त्रीके साथ विवाह करने योग्य बनाना और अपनी औषधि-चिकित्सासे यह सब करना एक बडी सिद्धिका आश्चर्य कारक कार्य है। इस विषयमें नीचे लिखे मंत्र यहां देखने योग्य हैं—

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिज ऋषिः।

युवं च्यवानं अश्विना जरन्तं
पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः। ऋ. १।११७।१३
पुनश्च्यवानं चक्रथुः युवानम्। ऋ. १।११८।६

अवस्युः आत्रेय ऋषिः।

विभिः च्यवान अश्विना नि याथः।

ऋ. ५।७५।५

पौर आत्रेय ऋषिः।

प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वव्रिं अत्कं न मुञ्चथः।
युवा यदी कृथः पुनः आ कामं ऋण्वे वध्वः॥

ऋ. ५।७४।५

अपनी शक्तियोंसे अतिवृद्ध च्यवन ऋषिको तुमने पुनः तरुण बनाया। (विभिः) पक्षी सदृश वाहनोंसे तुम च्यवन ऋषिके पास पहुंचे। तुमने वृद्ध च्यवनको तरुण बनाया, उसके शरीरपरसे चमडी कुर्ता उतारनेके समान उतारी और वह तरुण बननेके पश्चात् (वध्वः कामं आ वृण्वे) तरुणीकी कामनाको पूर्ण करने योग्य उसको सामर्थ्यवान् बनाया।

तरुण बनानेका यह फल है। च्यवनने तरुण बननेके पश्चात् तरुणियोंका मन अपने स्वरूपकी ओर आकर्षित किया। सच्चे तारुण्यका यही फल है। कायाकल्पकी यही सिद्धि है। तथा—

मैत्रावरुणिः वसिष्ठ ऋषिः।

उत त्यद् वां जुरते अश्विना भूत्
च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे।
अधि यद् वर्प इत ऊती धत्थः॥ ऋ. ७।६८।६

हे अश्विदेवो! (हविर्दे जुरते च्यवानाय) हवन करनेवाले वृद्ध च्यवनके लिये (वां त्यत्) तुम्हारा उनके पास जाना (प्रतीत्यं भूत्) हित कारक सिद्ध हुआ, क्योंकि (यत् इत ऊती वर्पः) मृत्युसे संरक्षण देनेवाला स्वरूप आपने (अधि धत्थः) उनको दिया। तथा—

युवं च्यवानं जरसो अमुमुक्तम्। ऋ. ७।७१।५

' तुमने च्यवन ऋषिको जरासे मुक्त कर दिया अर्थात् उसे तरुण बना दिया। ' तथा—

काक्षीवती घोष ऋषिका।

युवं च्यवानं सनयं यथा रथं।
पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः॥ ऋ. १०।३९।४

' तुमने (सनयं च्यवानं) वृद्ध च्यवनको (रथं यथा) जिस तरह रथको दुरुस्त करके नया जैसा बनाते हैं वैसा (चरथाय पुनः युवानं तक्षथुः) चलने फिरनेके लिये पुनः तरुण बना दिया। ' इस मंत्रमें ' तक्षथुः ' पद है। यह बता रहा है कि च्यवनके अंग और अवयव ठीक तरह दुरुस्त किये गये थे। एक अवयवमें भी जरा न रहे ऐसा औषधोपचार किया गया था, जिससे वह च्यवनऋषि तरुण जैसा चलने-फिरने और सब कार्य करनेके लिये योग्य बनाया था।

वेदमंत्रोंमें च्यवन ऋषिको तरुण बनानेका वर्णन इतना ही है। वह वृद्ध ऋषि कन्याओंका मन आकर्षित करने योग्य सुन्दर मोहक तरुण बन गया था। परंतु किस औषधि

प्रयोगसे वह तरुण बना, उस प्रयोगका नाम भी इन वेद-मंत्रोंमें नहीं है।

इन मंत्रोंको देखनेसे जिस विधिकी सूचना मिलती है वह विधि यह है। (च्यवानं नियाथः) अश्विदेव च्यवन ऋषिके पास गये, उस अतिवृद्ध ऋषिका कायाकल्प उन्होंने किया, (वर्विं, अस्कं न, द्रापिं न, मुञ्चथः) चोगा उतारनेके समान उस ऋषिके शरीरकी त्वचा उन्होंने उतार दी और उसको (पुनः युवानं चक्रथुः) फिर तरुण बना दिया। जिस तरह (रथं न) पुराने रथको दुरुस्त करके नया जैसा बनाते हैं, वैसा उन अश्विदेवोंने च्यवन ऋषिको तरुण बना दिया।

यह सब कार्य अश्विदेवोंने अपने (शचीभिः) पासकी औषधियोंकी शक्तियोंसे किया। जो च्यवन ऋषि चलने-फिरनेमें भी असमर्थ था उसको अच्छी तरहसे चलने-फिरने योग्य बना दिया तथा (वध्वः कामं) स्त्रियोंकी कामना पूर्ण हो जाय ऐसा सामर्थ्यवान् तरुण बना दिया। इतना ही इस कथाके मंत्रोंसे पता लगता है। यही कथा शतपथ ब्राह्मणमें लिखी है वह अब यहां देखिये—

च्यवन ऋषिकी कथा

च्यवनो वा भार्गवः, च्यवनो वाङ्गीरसः, तदेव जीर्णिः कृत्या रूपो जहे ॥ १ ॥ शर्यातो ह वा इदं मानवो ग्रामेण चचार। स तदेव प्रतिवेशो निर्विविशे। तस्य कुमाराः क्रीडन्त इमं जीर्णिं कृत्यारूपं अनर्थ्यं मन्यमाना लोष्टैर्विपिपिशुः ॥ २ ॥ स शर्यातेभ्यश्चुक्रोध। तेभ्योऽसंज्ञां चकार, पितेव पुत्रेण युयुधे, भाता भ्रात्रा ॥ ३ ॥ शर्यातो ह वा ईक्षां चक्रे। यत् किमकरं तस्मादिदं आपदीति। स गोपालांश्च अविपालांश्च संहयित्वा उवाच ॥ ४ ॥ स होवाच। को वो अद्येह किञ्चिदद्राक्षीदिति। ते होचुः, पुरुष एवायं जीर्णिः कृत्यारूपः शेते, तमनर्थं मन्यमानाः कुमारा लोष्टैः व्याक्षिपन्निति, स विदांचकार स वै च्यवन इति ॥ ५ ॥ स रथं युक्त्वा, सुकन्यां शार्यातीं उपाधाय प्रसिष्यन्द, स आजगाम, यत्र ऋषिरास तत्र ॥ ६ ॥ स होवाच। ऋषे नमस्ते, यन्नावेदिषं तेनाहिंसिषं, इयं सुकन्या, तया ते अपह्नवे, सं जानीतां मे ग्राम इति। तस्य ह तत एव ग्रामः संजज्ञे, स ह तत एव शर्यातो मानव उद्युयुजे, नेदपरं हिनसानीति ॥ ७ ॥ अश्विनौ ह वा इदं भिषज्यन्तौ चेरतुः। तौ सुकन्यां उपेयतुः, तस्यां मिथुनं ईषाते। तन्न जज्ञौ ॥ ८ ॥ तौ होचतुः। सुकन्ये कमिमं जीर्णिं कृत्यारूपं उपशेष, आवां अनुप्रेहीति, सा होवाच, यस्मै मां पिता अददात्, नैवाहं तं जीवन्तं हास्यामीति, तद्ध अयं ऋषि राजज्ञौ ॥ ९ ॥ स होवाच। सुकन्ये किं त्वेतदवोचतामिति, तस्मा एतद्व्याचचक्षे, स ह व्याख्यात उवाच, यदि त्वैतत्पुनर्युवतः सात्वं ब्रूतान्न वै सुसर्वाविव स्थो, न सुसमृद्धाविव, अथ मे पतिं निन्दथ इति, तौ यदि त्वा ब्रवतः, केन वामसर्वौ स्वः, केनासमृद्धाविति, सा त्वं ब्रूतात्, पतिं नु मे पुनर्युवाणं कृणुतं, अथ वां वक्ष्यामीति, तां पुनरुपेयतुः तां हैतदवोचतुः ॥ १० ॥ तौ होचतुः। एतं ह्रदं अभ्यवहर, स येन वयसा कमिष्यते तेनैवोदेष्यतीतिः तं ह्रदं अभ्यवजहार, स येन वयसा चकमे तेनोदेयायेति ॥ १२ ॥ श. प. ब्रा. ४।१।५।१-१२

च्यवन नामक एक ऋषि था, जो भृगुकुलका समझा जाता है, अथवा आंगिरस कुलका भी माना जाता है। वह अतिजीर्ण होकर मरियलसा होकर एक स्थान पर पडा था। उस स्थानपर मनुवंशका शर्याती नामक राजा गया। उस राजाके लडके वहां खेलने लगे। उन लडकोंने उस अतिजीर्ण ऋषिके मुर्दे जैसे शरीरपर पत्थर मारे। इससे ऋषिको क्रोध आया। इससे उस राजाके राज्यमें सब प्रजाजनोंकी बुद्धि भ्रष्ट हुई। वे आपसमें लडने लगे। पिता पुत्रसे, तथा भाई भाईसे लडाई शुरू होगयी। राजा शर्याती सोचने लगा कि, मैंने ऐसा कौनसा बुरा कर्म किया कि जिसके कारण यह आपत्ति मेरे राज्यपर आगयी। उसने गवालियोंको बुलाकर पूछा कि तुमने यहां कुछ देखा है? वे बोले कि, यह जो अतिजीर्ण मुर्दासा पडा है, वह मरा है ऐसा मानकर तुम्हारे कुमारोंने उसपर पत्थर मारे, वह च्यवन ऋषि है ऐसा उस राजाने जान लिया। पश्चात् राजाने अपना रथ

जोडा और अपनी कन्या सुकन्याको रथपर बिठला कर वह उस ऋषिके पास गया और उसे बोला कि 'हे ऋषे ! नमस्ते' मुझे तुम्हारा ज्ञान नहीं था, इसलिये तुमको बहुत कष्ट पहुंचे। क्षमा करो। यह मेरी पुत्री है, यह तुम्हारे लिये अर्पण करता हूं। इसको प्राप्त करके संतुष्ट हो जाओ। मेरे राज्यमें जो बलवा उठा है, वह शान्त हो जावे।'

'तब ऋषि सन्तुष्ट हुआ, इसके संतुष्ट हो जानेसे राजाके राज्यमें जो आपसी संघर्ष शुरू हुआ था, वह सब शान्त हुआ। यह देखकर शर्याती राजाने प्रतिज्ञा की, मैं अब इसके बाद किसीको कष्ट नहीं दूंगा। उस ऋषिके आश्रमके पास अश्विदेव किसीकी चिकित्सा करनेके लिये आये। थे उन्होंने सुकन्याको देखा और उस तरुणीकी इच्छा की। पर उस सुकन्याने उनके प्रस्तावका स्वीकार नहीं किया। तब वे उस सुकन्यासे पूछने लगे कि 'हे सुकन्ये ! तू इस मुर्दे जैसे जीर्णके पास क्यों रहती है ? तू हमारा स्वीकार कर।'

तब यह सुनकर वह सुकन्या बोली कि—'मेरे पिताने जिसको मेरा दान किया है, जबतक वह जीवित है, तबतक मैं उसे नहीं छोडूंगी।' सुकन्याका यह भाषण ऋषिने सुन लिया। तब वह ऋषि उस सुकन्यासे बोले कि क्या बात हो रही है। सुकन्याने जो हुआ वह सब निवेदन किया। तब ऋषिने उस सुकन्यासे कहा कि 'जिस समय वे अश्विनी कुमार फिरसे तुम्हें ऐसा भाषण करने लगेंगे, तब तुम उनसे कहना कि- 'तुम मेरे पतिकी निंदा करते हो, पर तुम तो अपूर्ण और सौभाग्य हीन हो। यदि तुम मेरे पतिको पुनः तरुण बना दोगे, तब तुमको सुपूर्ण और भाग्यसंपन्न बनानेका उपाय तुम्हें बताऊंगी।'

सुकन्याने ऐसा अश्विदेवोंसे कहा, तब वे बोले कि 'यदि तुम्हारा पति इस तालाबमें गोता लगावेगा, तो जिस आयुकी इच्छा करके गोता लगावेगा, उसी आयुको ऊपर आनेके पूर्व प्राप्त करेगा।' च्यवनने वैसा किया। और वह जीर्ण ऋषि उस तालाबमें गोता लगाते ही जिस आयुकी आकांक्षा उसने की उस आयुका बनकर वह ऊपर आया।

तब अश्विदेवोंने सौभाग्य संपन्न बननेका उपाय उस सुकन्यासे पूछा, तब च्यवनने यज्ञमें हविर्भाग प्राप्त करनेका उपाय उनको बताया। अश्विनी कुमार मानवोंमें जाते हैं, हरएककी चिकित्सा करते हैं, इसलिये देवोंकी पंक्तिमें बैठकर ये हविर्भाग सेवन नहीं कर सकते, ऐसा इन्द्रने निषेध किया था। पर च्यवन ऋषिके सामर्थ्यसे इस समयसे अश्विदेवोंको यज्ञमें हविर्भाग मिलने लगा।

शतपथ ब्राह्मणमें यह कथा इस तरह लिखी है। पुराणोंमें भी यह कथा करीब-करीब ऐसी ही है। इस शतपथकी या पुराणोंकी कथासे वेदके कथनका स्पष्टीकरण नहीं होरहा है। च्यवन ऋषि किस औषधि योजनासे तरुण हुआ यह इससे पता नहीं लगता।

आयुर्वेदके ग्रंथोंमें 'च्यवन प्राश' अवलेहका वर्णन है उसका प्रयोग करनेसे क्या फल मिलता है, यह वैद्योंका खोज करनेका विषय है। किसी उपायसे ही अश्विदेवोंने च्यवन ऋषिको तरुण बनाया था, इतनी बात वेद, ब्राह्मण तथा इतिहास पुराणके वर्णनोंसे सत्य प्रतीत होती है। आगे यह विषय वैद्योंकी खोजका है उस विषयमें वैद्य खोज करें।

इस रीतिसे अश्विदेवोंने (१) पंचजनोंका हित करनेके लिये यत्न करनेवाले अत्रिऋषिको राजकीय हलचल करनेके लिये कारावासमें पडनेके कारण कृश बननेकी अवस्थासे उत्तम हृष्टपुष्ट बनाया, (२) रुग्ण शुश्रूषाके वैमानिक पथक थे, विमान थे, इससे अन्य प्रकारके पथक भी होंगे, (३) विश्पलाको लोहेकी टांग लगाकर उसको चलने-फिरने योग्य बना दिया, (४) च्यवन ऋषिको तरुण बनाया।

इससे बडे आपरेशन भी होते थे, चिकित्साएं भी होती थी और अनेक प्रकारकी चिकित्सा तथा शस्त्र क्रियाके प्रकार भी थे यह स्पष्ट सिद्ध होता है।

इस लेखमें हमने चार उदाहरण दिये हैं जो अश्विदेवताओंके कार्यका स्वरूप बता रहे हैं। अत्रि ऋषिको पुनः पूर्ववत् कार्यक्षम बनाया, विश्पलाको लोहेकी टांग लगाकर उसको चलने-फिरने योग्य बनाया, अति वृद्ध च्यवनका कायाकल्प करके उसको तरुण बनाया और रुग्ण शुश्रूषाके वैमानिक पथकोंसे काम लिया। ये चार महत्वके उदाहरण हमने इस लेखमें दिये हैं।

अत्रिऋषि, कुमारी विश्पला और वृद्ध च्यवन ऋषि ये मनुष्य थे और वैमानिक पथकोंसे भुज्युको तथा उसके सैनिकोंको तीन अहोरात्र वैमानिक प्रवास करके अपने घर पहुंचाया वे भी सब मानव ही थे।

अश्विदेव देवोंके वैद्य हैं, पर यह चिकित्सा उनके द्वारा मानवोंकी ही हो रही है। इन चार उदाहरणोंमें ही मानवोंकी चिकित्सा होगई है ऐसी बात नहीं है, परंतु अश्विदेवोंने जितनी चिकित्साएं की हैं, अथवा इन चिकित्साओंका जो वर्णन वेदमें है वह बहुत करके मानवोंकी ही चिकित्सा है अर्थात् ये अश्विदेव यद्यपि देव थे तथापि ये मानवोंकी चिकित्सा करते हुए विचलन करते थे। इस चिकित्सा करनेके लिये इन्होंने धनके रूपमें मूल्य लिया ऐसा एक भी वचन नहीं है। इसलिये ये चिकित्सा विना कुछ लिये करते थे इसमें संदेह नहीं है।

वारंवार रोगियोंके घर जाना, उनके लिये औषधोपचार करना, चिकित्साएं तथा शस्त्रक्रियाएं करनी, रोगियोंको सुयोग्य पुष्टिकारक अन्न देना, उनको कार्यक्षम बनाना यह सब कार्य इनका था। इस कार्यपर ये देवराष्ट्रशासनद्वारा नियुक्त थे ऐसा दीखता है। इस कारण ही हमने इनको 'आरोग्य मंत्री' कहा है। इनके आधीन अनेक कार्यकर्ता सहायक अवश्य होंगे ही, अर्थात् इनके कार्यालयसे ये सब कार्य होते थे। इन नाना कार्योंको करनेके लिये इनको मानवोंके घर जाना पडता था। इसलिये देवोंकी पंक्तिमें बैठकर हविर्भाग ये ले नहीं सकते थे। शतपथ इसका वर्णन इस तरह कर रहा है—

न वै सुसर्वाविव स्थः, न सुसमृद्धौ इव।

श. ब्रा. ४।१।५।१०

'तुम (अश्विदेव) अपूर्ण और असमृद्ध जैसे हो।' अर्थात् अन्य देवोंके समान इनको हविर्भाग मिलता नहीं था।

जिस समय च्यवन ऋषिको इन्होंने तरुण बनाया उस समयके पश्चात् च्यवन ऋषिने यज्ञ किया और इस यज्ञमें च्यवन ऋषिने अन्य देवोंके साथ अश्विदेवोंको हविर्भाग दिया। यह देखकर इन्द्रने कहा कि ऐसी प्रथा नहीं है। परंतु च्यवन ऋषिने कहा कि मैं तो अश्विदेवोंको हविष्यान्न अवश्य दूंगा। इतना नहीं परंतु इसके पश्चात् सब यज्ञोंमें अश्विनौको अन्य देवोंके साथ हविष्यान्नका भाग मिलता रहेगा ऐसी व्यवस्था मैं करूंगा और इस तरह च्यवनने किया। इसकी सूचना शतपथ ब्राह्मणके ऊपर दिये वचनमें स्पष्ट रीतिसे दीखती है। इस विषयका शतपथ ब्राह्मणका संवाद यहां पुनः देखने योग्य है—

सुकन्या च्यवन ऋषिकी पत्नी थी। उनके साथ अश्विनौका वार्तालाप इस तरह हुआ—

सुकन्या— (न वै सुसर्वाविव स्थः, न सुसमृद्धौ इव) हे अश्विदेवो! तुम अपूर्ण हो तथा तुम असमृद्ध हो।

अश्विनौ— (केन असर्वौ स्थः, केन असमृद्धौ) हे सुकन्ये! किस कारण हम अपूर्ण और असमृद्ध हैं?

सुकन्या— (पतिं नु मे पुनर्युवानं कुरुतं, अथ वां वक्ष्यामीति) हे अश्विनौ! मेरे पतिको तरुण बनवाइये, फिर मैं कहूंगी कि, तुम अपूर्ण और असमृद्ध किस तरह हो।

यह संवाद बता रहा है कि अश्विनौ रोगियोंकी चिकित्सा करनेके लिये मानवोंमें जाते थे इसलिये देवोंकी पंक्तिमें बैठकर हविष्यान्न ले नहीं सकते थे। च्यवनको तरुण बनानेके पश्चात् च्यवन ऋषिके यज्ञसे अश्विनौको हविष्यान्नका भाग मिलने लगा।

चिकित्सकोंको रोगीका हरएक अवयव देखना पडता है, उसकी कार्य क्षमता देखनी पडती है, इस कारण प्राचीन समयमें वैद्य श्रोत्रियोंकी पंक्तिमें बैठ नहीं सकते थे। इस स्मार्त पद्धतिका उगम हम इस शतपथके वचनमें देखते हैं। अर्थात् इतने कष्ट सहन करके भी आरोग्य रक्षाका कार्य इनको करना पडता था। यह सब ये उत्तम रीतिसे करतेथे।

च्यवन ऋषिके तरुण बननेका उल्लेख जिन मंत्रोंमें हैं वे मंत्र इन ऋषियोंके हैं—

१ कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। ऋ. १।११६
२ अवस्युः आत्रेयः। ऋ. ५।७५
३ पौर आत्रेयः। ऋ. ५।७४
४ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। ऋ. ७।६८
५ काक्षीवती घोषा। ऋ. १०।३९

दीर्घतमाका पुत्र कक्षीवान्, अत्रिके पुत्र अवस्यु और पौर, मित्रावरुणोंका पुत्र वसिष्ठ और कक्षीवान्की पुत्री घोषा। इनके मंत्र यहां दिये हैं। वेद मंत्रोंके ये ऋषि हैं।

कक्षीवान्के मंत्र प्रथम मण्डलमें (ऋ. १।११६–११८) हैं। अत्रिपुत्र अवस्यु और पौरके मंत्र (ऋ. ५।७४–७५) में हैं। पञ्चम काण्डका नाम ही आत्रेय काण्ड है। वसिष्ठ ऋषिका सप्तम काण्ड है। ये ऋषि च्यवनको तरुण बनानेका कार्य अश्विदेवोंने किया ऐसा कहते हैं।

वृद्धको तरुण बनाया। यह मुख्य बात यहां है। किस रीतिसे तरुण बनाया इसकी थोडीसी सूचना इन मन्त्रोंमें है देखिये—

प्र च्यवानात् जुजूरुषो वव्रिं अत्कं न मुञ्चथः।

ऋ. ५।७४।५

'च्यवन ऋषिके शरीरसे कुर्ता उतारनेके समान चमडी उतार दी' और इससे वह तरुण बन गया। यहां तरुण बननेका उपाय मालूम होता है। वृद्धके शरीरपरकी चमडी उतरनेसे अन्दरसे जो दूसरी चमडी आती है वह तारुण्यके साथ आती है। सांप कंचुली निकालता है और पुनः तरुण बनता है। इस तरह यह है। अर्थात् वृद्ध मनुष्यको तरुण बनाना हो तो ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे उनके शरीरकी चमडी उतरी जाय, पर वह जीवित रहे। आयुर्वेद शास्त्रमें कायाकल्पके अनेक प्रयोग हैं उनमें शतभल्लातक और सहस्र भल्लातक ये प्रयोग हैं। शतभल्लातकका प्रयोग हमने स्वयं अपने शरीरपर किया था। प्रथम दिन एक, दूसरे दिन दो, इस तरह दसवे दिन १० भिलावे गौके दूधमें उबालकर उस दूधको ठंडा करके उसमें गायका घी और शहद मिलाकर सवेरे लेना। फिर एक-एक कम करके बीसवें दिन एक भिलावा लेना। पथ्य गौका दूध पीना और षाष्टिक चावलोंका भात खाना। बीस दिन हो आनेपर ४।५ दिनोंके बाद हमें मालूम हुआ कि शरीरपरकी पतली त्वचा जा रही है। जैसा आयुर्वेदमें कहा वैसा पथ्य हमने नहीं किया था। परंतु त्वचा जानेका अनुभव अवश्य हुआ। भिलावे अधिक लेते और पूरा पथ्य पालन करते, पूर्ण विश्राम लेते तो अवश्य लाभ होता। अर्थात् चमडीका उतरना यह अंशतः हमारे अपने अनुभवमें आया है।

च्यवनप्राश खानेसे चमडी उतरनेका अनुभव नहीं आता। अन्य कायाकल्प करनेका अनुभव हमें नहीं है। यहां यह इसलिये लिखा कि वेदमंत्रने जो कहा कि "चमडी कुर्ता उतारनेके समान उतार दी" यह कथन सत्य है। च्यवनकी चमडी किस उपचारसे उतार दी इसका पता वेदमंत्रोंसे नहीं लगता। शतपथका कहना है कि तालावमें डुबकी लगा दी और च्यवन तरुण बन गया। यह कथन हमारे समझमें नहीं आता। वैद्य तथा दूसरे विचारक इसका विचार करें और वह क्या है इसका निश्चय करें।

च्यवनके तरुण बननेके विषयमें इतना पर्याप्त है। च्यवन ऋषि मंत्र द्रष्टा ऋषि है। च्यवन भार्गव ऋषि ऋ. १०।१९।१-८ का वैकल्पिक माना है। शतपथानुसार 'च्यवनो वा भार्गवः, च्यवनो वा आंगिरसः' अर्थात् यह च्यवन भृगुकुलका होगा अथवा अंगिरस कुलका होगा। शतपथ ब्राह्मण निश्चय पूर्वक कहता नहीं कि यह च्यवन दोनोंमेंसे कौनसा है। शतपथके लेखको इस विषयमें संदेह है इस कारण हम उसका निश्चय नहीं कर सकते। इतना निश्चित है कि किसी वृद्ध च्यवनको अश्विदेवोंने अपनी चिकित्सा द्वारा तरुण बनाया था।

दस्रा आदित् पतिं अकृणुतं कनीनाम्।

ऋ. १।११६।१०

'अश्विनी देवोंने उसको अनेक कन्याओंका पति होने योग्य तरुण बनाया।' यह वर्णन उसके तरुण होनेका है। एक स्त्रीका नहीं परंतु अनेक स्त्रियोंका पति वह हो ऐसा युवा वह बन गया। यह निर्देश उसके जवानीके ओजका द्योतक है, बहुत स्त्रियां करनेका सूचक नहीं है।

अश्विदेवोंकी वृद्धोंको तरुण बनानेकी चिकित्साका वर्णन इस तरह यहां विचार करने योग्य है।

अत्रि ऋषिको सामर्थ्य प्राप्ति

वृद्धको तरुण बनाना यह कार्य जैसा औषध योजनासे होता है वैसा ही निर्बल अत्रिको पुनः पूर्ववत् बलवान् बनाना भी औषधिप्रयोगसे होनेवाला कार्य है। ऋषि लोग उन्मत्त राजाओंको राज्यगद्दीपरसे हटाते थे और प्रजाहितकारी राजाओंको राज्यगद्दीपर स्थापन करते थे। ज्ञानियोंको ऐसा ही कर्तव्य करना चाहिये यह उपदेश अत्रि ऋषिके हलचलसे पाठकोंको मिल सकता है। अपना संबंध राज्यशासनसे नहीं है पर आरोग्य मंत्रीके कार्यसे है। राज्यशासकोंने अत्रि ऋषिको कारावासमें रखा था। उनके साथ जो उनके (सर्वगणं अत्रिं ऋबीसे अवनीतं) अनुयायी थे, उन सबको जेलमें रखा था। उनको अधिकसे अधिक कष्ट दिये जाते थे, इस कारण ऋषि कृश हुए थे। इसलिये—

पितुमतीं ऊर्जं अस्मा अधत्तम्। ऋ. १।११६।८

पुष्टिकारक और बलवर्धक अन्न उनको अश्विदेवोंने दिया। यह अश्विदेवोंका चातुर्य है। निर्बल बने और कृश हुए

ऋषियोंको उन्होंने ऐसा अन्न दिया कि जिसके सेवन करनेसे उनमें बल भी बढा और शरीर पुष्ट भी हुआ।

त्यं चिदत्रिं ऋतजुरं अर्थं अश्वं न यातवे कृणुथः— उस अत्रिको चलने-फिरने योग्य घोडेके समान बलवान् और हृष्टपुष्ट बना दिया। ऐसा ही उनके सब अनुयायियोंको बलवान् बना दिया था। यह अश्विदेवोंका कार्य था। लोगोंका हित करनेके लिये ऋषि यत्न करते थे और उनको कष्ट हुए तो उन कष्टोंको दूर करनेका कार्य अश्विदेव करते थे। अर्थात् अश्विदेव जनताके हित करनेवालोंके पक्षमें रहते थे।

इस मंत्रमें ' नवं रथं न पुनः कक्षीवन्तं इव कृणुथः ' — रथको नया बनाते हैं वैसा अत्रिको पुनः नवीनसा, तरुण जैसा बनाया। दूसरा उदाहरण 'कक्षीवन्तं इव ' कक्षीवान्के समान पुनः बलवान् और सामर्थ्यवान् बनाया। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि कक्षीवान्को भी इसी तरह अश्विदेवोंने बलवान् बनाया था। यहां अत्रिके साथ कक्षीवान्का भी उदाहरण विचारमें लेना योग्य है।

इसी मंत्रमें ' नवं रथं इव ' ये पद महत्त्वके है। पुराने रथको दुरुस्त करके बिलकुल नया जैसा बनाते हैं उस तरह अत्रि और कक्षीवान्को युवा जैसा बनाया यह भाव यहां देखने योग्य है।

अत्रिका यह वर्णन करनेवाले मंत्र किन-किन ऋषियोंके हैं यह भी देखिये—

१ कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। ऋ. १।११६-११९
२ कुत्स आंगिरसः। ऋ. १।११२
३ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। ऋ. १।१८०
४ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ऋ. ७।६८
५ ब्रह्मातिथिः काण्वः। ऋ. ८।५
६ अत्रिः सांख्यः। ऋ. १०।१४३
७ गोपवन आत्रेयः। ऋ. ८।७३
८ सप्तवध्रिः आत्रेयः। ऋ. ५।७८
९ काक्षीवती घोषा। ऋ. १०।३९

इतने ऋषियोंके मंत्र यहां दिये हैं। सांख्य कुलोत्पन्न अत्रिऋषि एक है। पञ्चममण्डल ' आत्रेयमण्डल ' है उसमें—

अत्रिः भौमः
अत्रिः सांख्यः
अत्रिः

ये तीन ऋषि पृथक् हैं। इनमेंसे यह राष्ट्रीय हलचल करनेवाला अनुयायियोंके साथ कारावासमें जानेवाला एक है वा भिन्न है इसका पता नहीं लगता। सांख्य अत्रि कारावासमें पडे अत्रिका वर्णन ऐसा किया है—

त्यं चिदत्रिं ऋततुरं अर्थं अश्वं न यातवे।
ऋ. १०।१४७।१

' उस जर्जर बने अत्रिऋषिको घोडेके समान चलने-फिरने योग्य सामर्थ्यवान् बनाया। ' इस वर्णनसे स्पष्ट होता है सांख्य अत्रिसे यह अत्रि भिन्न है। क्योंकि ' तं अत्रिं ' (उस अत्रिको) ऐसे पद यहां हैं।

' सप्तवध्रिःआत्रेयः ' और ' गोपवन आत्रेयः ' ये दो ऋषि अत्रिके कारावासका वर्णन करते हैं। ये इनके नामसे ही अत्रिकुलोत्पन्न हैं। इनके मंत्रोंमें भूतकालके प्रयोग हैं—

सप्तवध्रिः आत्रेयः।

अत्रिः अजोहवीत् नाधमानेव योषा। ऋ. ५।७८।४

गोपवन आत्रेयः—

अत्रये गृहं कृणुत यूयं अश्विना। ऋ. ८।७३।७

सप्तवध्री— अनाथ स्त्रीके समान अत्रिने आपकी प्रार्थना की।

गोपवन— हे अश्विनो! अत्रिके लिये आपने सुखदायक घर बनाया।

अत्रिवंशके विद्वान् कह सकते हैं वैसे ये वचन हैं। इस कारण इनसे प्राचीन अत्रि था इसमें संदेह नहीं है।

अत्रि ऋषि अनुयायियोंके साथ स्वराज्य स्थापनकी हलचल करते थे और उस कारण उनको कारावासका दुःख प्राप्त हुआ। उसमें वे बडे कृश और निर्बल हुए और अश्विदेवोंने उनको पुष्टिवर्धक अन्न देकर पुनः कार्यक्षम बनाया। इसमें अत्रि ऋषिकी हलचल स्वराज्य स्थापनार्थ थी ऐसा स्पष्ट होता है। ऋषि लोग स्वराज्य स्थापनार्थ कितने यत्न

करते थे, इसका पता यहां लगता है। इसका परिणाम स्वराज्यकी घोषणा करनेमें हुआ है। ' अत्रि कुलोत्पन्न रातहव्य ' ऋषिकी यह घोषणा है—

रातहव्य आत्रेयः

आ यद् वां ईयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः।
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥

ऋ. ५।६६।६

' हे विस्तृत दृष्टिवालो, हे मित्रो ! तुम और हम विद्वान् मिलकर विस्तृत, बहुतोंकी संमति द्वारा जिसका पालन होता है, उस स्वराज्यमें जनहितार्थ प्रयत्न करेंगे। '

यह घोषणा अत्रि कुलोत्पन्न रातहव्य ऋषिकी है। इससे अत्रि ऋषिकी प्रचण्ड हलचलके स्वरूपका पता लग सकता है। ऐसी हलचलमें अश्विदेव कारावासमें कष्ट भोगनेवाले लोगोंको पुनः कार्यक्षम तथा सामर्थ्यवान् बनाते थे। इससे अश्विदेवोंके कार्यका महत्व जाना जा सकता है।

ऊपरके उदाहरणोंमें औषधिचिकित्साका वर्णन आया है। च्यवनको तरुण बनाया इसमें एक व्यक्तिके सुधारका वर्णन है, परंतु अत्रि ऋषिको तथा उनके अनुयायियोंको, जो कारावासके कष्टोंसे क्षीण हुए थे उनको, पुनः सामर्थ्यवान् बनाया, इसमें सामुदायिक औषधिचिकित्सा है। अश्विदेवोंकी आरोग्यसाधनामें इतना महान सामर्थ्य था।

लोहेकी टांग लगाना

अब हम शस्त्रक्रिया करनेका कार्य अश्विदेव करते थे इसका विचार करेंगे। खेल राजाकी पुत्री विश्पला थी। वह युद्धमें गयी। युद्ध करते समय उसकी टांग टूट गयी, उस पर शस्त्रक्रिया करके वहां अश्विदेवोंने लोहेकी टांग लगाकर उस विश्पलाको चलने फिरने योग्य बनाया। यह शस्त्रक्रियाका कार्य है। इसका वर्णन करनेवाले ये ऋषि हैं—

१ कुत्स आंगिरस। ऋ. १।११२
२ कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। ऋ. १।११६
३ काक्षीवती घोषा। ऋ. १०।३९

विश्पलाकी टांग काट कर उस स्थानपर लोहेकी टांग बिठलायी और उसको (एतवे कृथः) चलने-फिरने योग्य बनाया। युद्धमें जाने योग्य उसको बनाया। यह बडी कुशलताकी बात है इसमें संदेह नहीं है।

जो शस्त्रक्रिया करनेवाले लोहेकी टांग बिठलाते हैं और मनुष्यको चलने-फिरने योग्य बनाते हैं वे मनुष्यके अन्य अवयवोंको भी कृत्रिम या बनावटी बनाकर लगा सकते हैं इसमें संदेह नहीं हो सकता। हाथ बनावटी बनाकर लगाना, अंगुलियां लगाना, इस तरह बनावटी अवयव बनाकर मनुष्यको कार्य करनेमें समर्थ बनाया जाता था, यह यहां सिद्ध होता है। प्रथमतः टांग काटकर फेंकना यह बडी शस्त्रक्रियाका कार्य है। उस जखमको ठीक करके वहां लोहेकी टांग लगाना, इसी तरह अन्यान्य अवयव लगाना यह विद्या इस तरह वैदिक विद्याओंमें है इसमें संदेह नहीं है।

वैमानिक पथक

भुज्युके रुग्ण सैनिकोंको अश्विदेवोंके तीन या चार वैमानिकोंने बचाया, इसका वर्णन पूर्व स्थानमें दिया है। वे विमान थे, आकाशमेंसे पक्षीके समान वे जाते थे, वे आकाशमें स्थिर भी रह सकते थे और उनमें भूमिपर नीचे रहे जखमी सैनिकों को ऊपर उठाकर लेनेके कला यंत्र थे। इतना वर्णन पूर्व भागमें दिया है। विमान चलानेके योग्य विशेष गति उत्पन्न करनेवाले यंत्र उनमें होंगे ही। ये इंजिन तैयार करनेके कारखाने होंगे, इतनी यंत्र विद्या होगी। यह सब मानना पडता है।

और एक विचार

यहां इस लेखमें (१) अत्रि ऋषिका कारावास, (२) विश्पलाको लोहेकी टांग लगाना, (३) वृद्ध च्यवन ऋषिको तरुण बनाना और (४) वैमानिक शुश्रूषा पथककी सैनिकीय शुश्रूषा ये चार विषय हैं। ये इतिहास जैसे दीखते हैं। एक पक्ष ऐसा है कि वेदमें इतिहास नहीं है ऐसा मानता है। दूसरा पक्ष वेदमें प्राचीन कल्पका इतिहास आ सकता है ऐसा मानता है। सृष्टिके आदिमें वेद प्रकट हुए अतः पूर्व सृष्टिकी कुछ बातें वेदमें आ गई हैं ऐसा इस पक्षका मत है। ' धाता यथा पूर्वमकल्पयत् ' विधाताने पूर्व कल्पके समान इस कल्पमें रचना की है। इस कारण इतिहासकी कुछ बातें आ गई हैं। ऐसा ये लोग कहते हैं।

च्यवन ऋषिकी कथाका विचार शतपथने किया है और च्यवनका कुल भृगुका है अथवा अंगिरा ऋषिका है ऐसा

कहा है। च्यवन ऋषिके कुलके विषयमें शतपथकारको ठीक पता नहीं, पर दोनोंमेंसे किसी एक कुलका वह है इतना तो शतपथकार कहता है। अर्थात् च्यवन ऋषि ऐतिहासिक व्यक्ति है ऐसा शतपथका कहना है। इस ऋषिको अश्वि-देवोंने तरुण बनाया, स्त्रियोंका उपभोग लेनेके योग्य सामर्थ्यवान् बनाया। शतपथकारके मतसे च्यवन वृद्ध था, उसको उपचार करके तरुण बनाया यह सिद्ध है। शतपथके इस मतका खण्डन करना असम्भव है।

यदि च्यवन ऋषि ऐतिहासिक व्यक्ति था तो अत्रि, विश्पला और भुज्यु आदिको ऐतिहासिक व्यक्ति माननेमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती। ऋग्वेदका पंचम मण्डल अत्रिका ही मण्डल है जिसमें अत्रिकुलोत्पन्न रातहव्य ऋषि-की 'बहुपाप्य स्वराज्य' की घोषणा है। इस घोषणासे भी प्रतीत होता है कि रातहव्य ऋषिके पूर्वजने स्वराज्य स्थापनाकी हलचल की होगी। और शत्रुराष्ट्रके दुःशासनको दूर किया ही होगा।

अपने अनुयायियोंके साथ अत्रिऋषि हलचल करता था। इन सब हलचल करनेवालोंको कारावासमें डाला गया था। ऐसा होना स्वाभाविक ही था। दुष्ट राज्यशासन ऐसा ही करते हैं और प्रजाजनोंकी आकांक्षाएं ऐसी ही मारना चाहते हैं।

रातहव्य ऋषिकी स्वराज्यकी घोषणा स्पष्ट है। उसमें 'बहुपाप्य स्वराज्य' ये पद हैं। बहुसंमतिसे जिस स्वराज्यका पालन किया जाता है उस स्वराज्यमें हम प्रजाकी उन्नतिके लिये यत्न करेंगे। यह रातहव्य ऋषिका कथन उसके पूर्वज अत्रि ऋषिकी हलचलका संबंध बताता है। अर्थात् ये दोनों कथन एक दूसरेके साथ जोडकर देखनेसे दोनों कथनोंका ठीक भाव ध्यानमें आसकता है।

इस तरह च्यवनकी कथा और अत्रिकी कथाका ऐतिहा-सिक स्वरूप स्पष्ट होता है। विश्पला और वैमानिक पथकका भी इसी तरह विचार हो सकता है।

निरुक्तकार 'इति ऐतिहासिकाः' 'इति नैरुक्ताः' इस तरह ऐतिहासिकोंका पक्ष स्वतंत्र ऋषिसे देता है। वह ऐतिहासिक पक्षको छिपाता नहीं। और निरुक्त पक्षसे वह भिन्न पक्ष है ऐसा कहता है इससे यह स्पष्ट होता है कि निरुक्तकारके पक्षसे भिन्न ऐतिहासिक पक्ष था, परंतु वह उसके समय भी था और कई लोग उस पक्षको माननेवाले भी थे। शतपथकार भी इस इतिहासपक्षको देता है, इतना प्रबल यह पक्ष था।

विश्पलाकी टांग और वैमानिक शुश्रूषा पथकके विषयमें भी उसी तरह ऐतिहासिक पक्षवाले अपने पक्षका समर्थन कर सकते हैं।

जो इस इतिहास पक्षको नहीं मानते वे इन शब्दोंके यौगिक अर्थ करते हैं और ये पद गुणबोधक हैं, व्यक्ति-बोधक नहीं है ऐसा प्रतिपादन करते हैं।

अश्विनौ देवोंने क्या क्या कार्य किये वे हमने बताये हैं। इतिहास पक्षका आश्रय लेकर ही हमने वह बताया है। पाठक इसको विचार करके जान सकते हैं। दूसरा पक्ष क्या है यह पाठकोंके सामने आजाय इस कारण यहां इस दूसरे पक्षका केवल निर्देश ही किया है। इससे वेदके अर्थका विचार ठीक तरह पाठक कर सकते हैं।

अश्विनौ ये स्वास्थ्यमंत्री थे, उनके कार्य देखनेसे अन्या-न्य बातोंका भी पता लगता है और वैदिक सभ्यताका विशाल स्वरूप ऐतिहासिक पक्षसे ध्यानमें आ जाता है।

पाठक इसका विचार करें। आगे अश्विदेवोंके अन्य कार्योंका स्वरूप और अधिक बताया जायगा।